डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण,
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
दिनांक : 28/07/2005

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **कु. सुकेशिनी प्रकाश पाटील** द्वारा एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत **''पद्माशा एवं सानिया की कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन'' ('छोटे शहर की शकुंतला', तथा 'परिमाण' के विशेष संदर्भ में ।)** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

28/07/05

स्थान - कोल्हापुर
तिथि - 28/07/2005

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
HEAD
Department of Hindi
Shivaji University, Kolhapur.

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण,
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **कु. सुकेशिनी प्रकाश पाटील** ने मेरे निर्देशन में **'पद्माशा एवं सानिया की कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन'' ('छोटे शहर की शकुंतला' तथा 'परिमाण' के विशेष संदर्भ में ।)** लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की **एम्.फिल. (हिंदी)** उपाधि के लिए लिखा है । पूर्वयोजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है । जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध-छात्रा के कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने की अनुमति प्रदान करता हूँ ।

शोध - निर्देशक

28/07/05

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 28/07/2005

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
HEAD
Department of Hindi
Shivaji University, Kolhapur.

प्रख्यापन

'पद्माशा एवं सानिया की कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन'' ('छोटे शहर की शकुंतला', तथा 'परिमाण' के विशेष संदर्भ में ।) लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो **एम्.फिल. (हिंदी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

शोध-छात्रा

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 28/07/2005

(कु. सुकेशिनी प्रकाश पाटील)

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

प्राक्कथन

प्राक्कथन

भारतीय संस्कृति में स्त्री को आदर का स्थान है । मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूँ कि, मेरा जन्म स्त्री रुप में हुआ । प्राचीन काल से स्त्री को जो मान-सन्मान मिला उसका मुझे गर्व है । लेकिन मैंने खुद देखा और अनुभव किया कि आज स्त्री का यह रुप कहीं अस्तित्वहीन हो रहा है । प्राचीन काल में स्त्री को जो स्थान था-माता रुप में, पत्नी के रुप में तथा बहन के रुप में वह आज नहीं रहा । आधुनेकयुगीन संघर्षमय जीवन में स्त्री का उपयोग समिधा के रुप में किया जा रहा है । आज स्त्री खुलकर जीना चाहती है । अपने आप पर किसी का दबाव लेना नहीं चाहती और मैं भी इसी परिस्थितियों से गुजर रही हूँ । इसीलिए मैंने नारी से संबंधित अनेक लेखिकाओं के गद्य और पद्य साहित्य का अध्ययन प्रारंभ किया ।

अध्ययन के दौरान मेरी मातृभाषा मराठी होने के कारण मैंने मराठी की लेखिकाओं की साहित्यिक विधाओं का अध्ययन प्रारंभ किया । मेरी बी. ए. और एम्. ए. की उपाधी हिंदी विषय में होने के कारण मैनें आज तक हिंदी की अनेक कहानियों को पढ़ा हैं । इन कहानीकारों में मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, पद्माशा झा आदि की कहानियाँ पढ़ी । मराठी साहित्य में प्रमुख कहानीकारों में आशा बगे, मालती जोशी, चारुता सागर, सानिया आदि की कहानियाँ पढ़ी । इन दोनों भाषाओं में से मुझे हिंदी की **पद्माशा झा** तथा मराठी की **सानिया** की कहानियाँ सशक्त लगी जो स्त्री की चेतना और संघर्ष को यथार्थ रुप में पाठकों के सामने रखती हैं । इसीलिए मैंने मेरे लघुशोध प्रबंध के लिए इन दोनों लेखिकाओं की कहानियों का अनुशीलन करना तय किया । इसीलिए मैं गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण सर जी से मिली । उनसे मैनें मेरी रुचि के संदर्भ में बातें की तथा उन्होंने मुझे विषय के संदर्भ में नई दिशाएँ दे दीं । उनके निर्देश में मैंने लघु-शोध प्रबंध के हेतु निम्नलिखित विषय का चुनाव किया ।

''पद्माशा एवं सानिया की कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन'' (छोटे शहर की शकुंतला तथा परिमाण के विशेष संदर्भ में ।)

अत: अध्ययन की सुविधा के लिए उपर्युक्त विषय को मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया हैं जों इसप्रकार हैं -

प्रथम अध्याय :

'पद्माशा' तथा 'सानिया' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: तुलनात्मक अनुशीलन ।

द्वितीय अध्याय :

विवेच्य कहानियों का कथ्य : तुलनात्मक अनुशीलन ।

तृतीय अध्याय :

विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन : तुलनात्मक अनुशीलन ।

चतुर्थ अध्याय :

विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्याएँ : तुलनात्मक अनुशीलन ।

पंचम अध्याय :

विवेच्य कहानियों का रचना शिल्प : तुलनात्मक अनुशीलन ।

प्रथम अध्याय : 'पद्माशा' तथा 'सानिया' का व्यक्तित्व एवम् कृतित्व : तुलनात्मक अनुशीलन ।

प्रस्तुत अध्याय में मैंने पद्माशा और सानिया का जीवन परिचय दिया हैं । दोनों रचनाकर नारी होने के कारण उन्होंने नारी की स्वानुभूति को आत्मानुभूति के रुप में लिपिबद्ध किया हैं । दोनों का जीवन शहरी प्रदेश में बितने के कारण दोनों की कहानियों में शहरी वातावरण का चित्रण मिलता हैं । दोनों का जीवन परिचय देते समय जन्म, मात-पिता, शिक्षा तथा पारिवारिक जानकारी दे दी हैं । दोनों का रचनाकाल एक ही हैं तथा दोनों के लेखन शैली का परिचय देते हुए अंत में दोनों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में मैंने निष्कर्ष रुप में जो साम्य-वैषम्य पाए है वे विवेच्य अध्याय के अंत में दिए हैं ।

द्वितीय अध्याय : विवेच्य कहानियों का कथ्य : तुलनात्मक अनुशीलन ।

द्वितीय अध्याय में मैंने विवेच्य कहानियें के कथ्य का तुलनात्मक अनुशीलन किया है । दोनों कहानी संग्रहों का अध्ययन करने पर मुझे प्रमुख दिखाई दिए गए कथ्य को नौ विभागों में

विभाजन किया है । वे एस प्रकार हैं - दोनों कहानी संग्रहों में चित्रित कामकाजी नारी, हालात से समझौता करनेवाली नारी, घुटन में जीनेवाली नारी, वैवाहिक अस्थिरता से पीड़ित नारी, स्वतंत्र अस्तित्व की कामना करनेवाली नारी, अंतरजातीय प्रेमविवाह से ग्रस्तनारी, धन की लालसा से पीड़ित नारी, अवैध-यौन संबंध रखनेवाली नारी, राजनैतिक खोखलापन से शोषित नारी आदि का तुलनात्मक अध्ययन किया हैं । अंत में दोनों कहानियों में निष्कर्ष रुप में जो साम्य-वैषम्य मिलता है वह विवेच्य अध्याय के अंत में दिया गया है ।

तृतीय अध्याय : विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन : तुलनात्मक अनुशीलन ।

तृतीय अध्याय में विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है । दोनों कहानी संग्रह में चित्रित दांपत्य जीवन की सफलता तथा असफलता पर दृष्टि डाली गई है । पारिवारिक जीवन में स्थित शोषण, पीड़न, नारी की कर्मठता तथा कठोरता का यहाँ चित्रण किया गया है । नारी के सामाजिक जीवन की विवशता में नारी का घृणित तथा जागृत जीवन का विवरण यहाँ किया गया है । नारी के आर्थिक स्थिति के अंतर्गत स्वावलंबी नारी तथा परावलंबी नारी का चित्रण किया गया है । अंत में दोंनो कहानी संग्रहों में जो साम्य-वैषम्य निष्कर्ष रुप में सामने आते हैं वे विवेच्य अध्याय के अंत में दिए गए हैं

चतुर्थ अध्याय : विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्याएँ : तुलनात्मक अनुशीलन ।

प्रस्तुत अध्याय में मैंने विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्याओं का तुलनात्मक अनुशीलन किया है । यहाँ नारी जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण मिलता है । विवाह-विच्छेद की समस्या, अकेलेपन की समस्या, प्रेमविवाह की समस्या, बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या, स्त्री-पुरुष अनैतिक संबंधों की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, यौन समस्या, दहेज समस्या, मालिक द्वारा शोषण की समस्या का चित्रण यहाँ तुलनात्मक दृष्टि से किया गया है । अंत में विवेच्य समस्याँओं को लेकर दोनों कहानी संग्रह में जों साम्य-वैषम्य दृष्टिगोचर हुआ वह विवेच्य अध्याय के अंत में दिया गया है ।

पंचम अध्याय : विवेच्य कहानियों का रचना शिल्प : तुलनात्मक अनुशीलन ।

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य कहानियों का रचना शिल्प की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । यहाँ कथावस्तु के परिप्रेश्य में दोनों कहानी संग्रहों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । दोनों कहानीसंग्रह में चित्रित पात्र एवं चरित्र की तुलना की गई है । संवाद एवं कथोपकथन के अंतर्गत दोनों कहानी संग्रहों की विशेषताओं का तुलनात्मक अनुशीलन किया है । दोनों कहानी संग्रहों में चित्रित वातावरण का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया हैं । भाषा शैली के अंतर्गत दोनों के भाषागत एवं शैलीगत विशेषताओं का विवेचन किया गया है । दोनों कहानी संग्रहों के उद्देश्य का तुलनात्मक अनुशीलन यहाँ किया गया है । अत: अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष के रूप में साम्य वैषम्य दिए गए हैं ।

अन्त में उपसंहार दिया गया है जिसके अंतर्गत सभी अध्यायों का तुलनात्मक अनुशीलन साम्य-वैषम्य के रुप में प्रस्तुत किया गया है । त:त्पश्चात परिशिष्ट, आधार ग्रंथ और संदर्भसूची दी गई है ।

प्रस्तुत शोध कार्य की मौलिकता :

1. दोनों लेखिकाओं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।
2. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में दोनों कहानी संग्रहों का कथ्यात्मक विवेचन तुलनात्मक अनुशीलन द्वारा अभिव्यक्त किया गया है ।
3. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में नारी के यथार्थ जीवन का दोनों कहानी संग्रहों के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।
4. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में दोंनो कहानी संग्रहों के परिप्रेक्ष्य में नारी की समस्याओं का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।
5. दोनों कहानी संग्रह के रचनाशिल्प का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।

ऋणनिर्देश

मैं सर्वप्रथम अपने आदरणीय गुरुवर्य **डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण**, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ । आपके अमूल्य मार्गदर्शन में मैं अपना शोधकार्य पूरा कर सकी । गुरु के साथ-साथ एक शुभ-चिंतक के रुप में भी आपने मुझे प्रेरित, प्रोत्साहित किया, अनेक सुझाव दिए, मेरी अनेक समस्याओं को हल किया । आपके कारण मेरी अनेक बाधाएँ हल हुई । आपका यह स्नेहित और आत्मियतापूर्ण स्वभाव मुझे जीवन भर याद रहेगा, जिसके लिए मैं आजीवन कृतज्ञ रहूँगी ।

मेरी दूसरी आदरणीय गुरुवर्या **डॉ. शशिप्रभा जैन**, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महावीर कॉलेज, कोल्हापुर के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अमूल्य मार्गदर्शन के साथ-साथ, समय-समय पर अनेक सुझाव देकर, मेरी अनेक समस्याओं का हल करके मेरे लघु शोध प्रबंध की चर्चाएँ करके मुझे प्रोत्साहित किया अत: उनकी भी आजीवन कृतज्ञ रहूँगी ।

मेरे **माता-पिता**, भाई **युवराज**, बहन **चोगिता** तथा **नौमिता** की त्याग के कारण मैं लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत कर पाई । मेरे प्रेरणास्त्रोत स्व. चाचा **मोहनरावजी पाटील** के आशीर्वाद से एवमं बुवा **राजश्री**, फूफी **रत्ना** और फूफा **तानाजी थोरात**, **डॉ. सुधीर** चाचा तथा **दिलीप** चाचा इनके आशीर्वाद और सदिच्छा के कारण मैं अपना लघु शोध-कार्य बिना अवरोध पूरा कर सकी । साथ ही मेरे आदरणीय गुरुवर्य **प्रा. डॉ. रमेश गवळी जी, प्रा. अनिल फडणीस जी, प्रा. प्रशांत नागांवकर, प्रा. श्री. पट्टेकरी जी, प्रा. एकनाथ पाटील** तथा **प्रा. मणेर** की मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने मुझे समय-समय पर मौलिक मार्गदर्शन किया ।

मेरे परम मित्र **किरण चौगुले** का मैं विशेष आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे समय-समय पर मौलिक तथा अनमोल सहकार्य किया । मेरे सहपाठी एवम् सहपाठीन **अनघा, पिंकी, द्राक्षायणी, मनीषा, बेबी, उत्कर्षा, माधुरी, स्नेहल** तथा **प्रा. गजानन अपिने** आदि की मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने मेरी अनमोल मदद की ।

मेरे परम मित्र **उमेश काळे, चंद्रशेखर बिडवाई, अर्चना, मनीषा, सविता** तथा **पल्लवी** इनको मैं विशेष आभार व्यक्त करती हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध कार्य का टंकण सुचारु रुप से करनेवाले **भावना टायर्पिंग** के. **श्री. सचिन कदम**, हमारे विभाग से सभी सेवक तथा ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों का जिनका प्रत्यक्ष एवम् अप्रत्यक्ष सहकार्य मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ है, उन सबकी मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वानों के समक्ष परीक्षणार्थ अत्यंत विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ ।

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 28/07/2005

कु. सुकेशिनी प्रकाश पाटील

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय **1- 11**

पद्माशा तथा स्रानिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : तुलनात्मक अनुशीलन ।

1. डॉ. पद्माशा झा ।

1.1 व्यक्तित्व परिचय ।

1.1.1 जन्म ।

1.1.2 नाम तथा बाल्यकाल ।

1.1.3 माता-पिता ।

1.1.4 भाई-बहन

1.1.5 शिक्षा ।

1.1.6 पारिवारिक स्थिति तथा विवाह ।

1.1.7 प्रेरणा ।

1.1.8 स्वभाव ।

1.2 कृतित्व ।

1.2.1 काव्यसंग्रह ।

1.2.2 कहानी संग्रह ।

1.2.3 उपन्यास ।

1.2.4 बालकथायें ।

1.2.5 इतिहास ।

2. सानिया

2.1 व्यक्तित्व परिचय ।

2.1.1 जन्म तथा नाम ।

2.1.2 शिक्षा ।

2.1.3 विवाह ।

2.1.4 प्रेरणा ।

2.1.5 पुरस्कार एवं सम्मान ।

2.2 कृतित्व

2.2.1 कहानी संग्रह

2.2.2 उपन्यास ।

2.2.3 अनुवाद ।

2.2.4 काव्यसंग्रह ।

तुलनात्मक अनुशीलन ।

द्वितीय अध्याय **12 - 55**

विवेच्य कहानियों का कथ्य : तुलनात्मक अनुशीलन ।

2. प्रास्ताविक ।

2.1 कामकाजी नारी ।

2.2 हालात से समझौता करनेवाली नारी ।

2.3 घुटन में जीनेवाली नारी ।

2.4 वैवाहिक अस्थिरता ।

2.5 स्वतंत्र अस्तित्व की कामना ।

2.6 अंतरजातीय प्रेमविवाह ।

2.7 धन की लालसा ।

2.8 अवैध-यौन संबंध ।

2.9 राजनीति का खोकलापन ।

तुलनात्मक अनुशीलन ।

तृतीय अध्याय **56 - 94**

''विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन : तुलनात्मक अनुशीलन ।''

3. नारी जीवन ।

3.1 नारी का दांपत्य जीवन ।

3.1.1 सफल दांपत्य जीवन ।

3.1.2 असफल दांपत्य जीवन ।

3.2 नारी का पारिवारिक जीवन।

3.2.1 शोषित तथा पीड़ित नारी।

3.2.2 कर्मठ तथा कठोर नारी।

3.3 नारी का सामाजिक जीवन

3.3.1 विवश तथा घृणित नारी।

3.3.2 जागृत नारी।

3.4 नारी का आर्थिक जीवन।

3.4.1 स्वावलंबी नारी।

3.4.2 परावलंबी नारी।

तुलनात्मक अनुशीलन।

चतुर्थ अध्याय **95 - 123**

विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्याएँ : तुलनात्मक अनुशीलन।

4. विषय - प्रवेश

4.1 विवाह-विच्छेद की समस्या

4.2 अकेलेपन की समस्या।

4.3 प्रेमविवाह की समस्या।

4.4 बच्चों के बिखरे जीवन की सनस्या।

4.5 स्त्री-पुरुष अनैतिक संबंध की समस्या।

4.6 अनमेल विवाह की समस्या।

4.7 यौन समस्या।

4.8 दहेज समस्या।

4.9 मालिक द्वारा शोषण की सनस्या।

तुलनात्मक अनुशीलन।

पंचम अध्याय 124 - 147

विवेच्य कहानियों का रचना शिल्प : तुलनात्मक अध्ययन ।

5. कहानी का रचना शिल्प से तात्पर्य ।

5.1 कथावस्तु ।

5.2 पात्र और चरित्र-चित्रण ।

5.3 संवाद ।

5.4 वातावरण ।

5.5 भाषा - शैली ।

5.6 उद्देश्य ।

तुलनात्मक अनुशीलन ।

उपसंहार 148 - 157

परिशिष्ट 158 - 160

संदर्भ ग्रंथ-सूची 161 - 164